

मध्यप्रदेश के पंचमढ़ी जैव अभ्यारण्य में स्थानीय लोगों द्वारा वृक्षों का उपयोग

डा. सरला शुक्ला

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, का0 सु0 साकेत पी0 जी0 कालेज, अयोध्या

Email: drsarlashukla1@gmail.com



Received 01 September 2026

Accepted 05 September 2026

Published 11 September 2026

Corresponding Author:

डा. सरला शुक्ला

Email: drsarlashukla1@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i5.07>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

भारत के प्रमुख राज्य मध्य प्रदेश में स्थित पंचमढ़ी जीवमंडल अभ्यारण्य बहुत सघन वनों से घिरा हुआ है। यहाँ पर विभिन्न आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। वो यहाँ पर वृक्षों की अनेक प्रजातियों पर आज भी निर्भर हैं। इन वृक्षों की सुलभता व प्रचुरता उनके पारंपरिक ज्ञान को बढ़ाने में बहुत सहायता प्रदान करती हैं।

यह शोधपत्र इस अभ्यारण्य में उत्पन्न होने वाली विभिन्न वृक्षों की प्रजातियों के उपयोग के संबंध में आदिवासी जातियों के पारंपरिक ज्ञान को प्रकाश में लाता है। यह शोधपत्र साक्षात्कार तथा प्रश्नावली के माध्यम से तैयार किया गया है। इस अध्ययन में यहाँ के लोगों द्वारा भोजन, औषधि और अन्य उपयोग में लायी जाने वाली वृक्षों की कुल 46% प्रजातियों को सम्मिलित किया जाता है। इन 46% वृक्ष प्रजातियों में से 91% का उपयोग भोजन और औषधि में किया जाता है। 26% का उपयोग विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं को करने में, 22% का उपयोग ईंधन की लकड़ी के लिए, और 17% का उपयोग मकान निर्माण के लिए किया जाता है।

स्थानीय लोगों द्वारा जंगलों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से एकत्रित किए गए महत्वपूर्ण वृक्ष और उनके भाग हैं मोधुका इंडिका, बुचानिया लैजन्, डायोस्पायरोस मेलानोजाइलन, सिजियम क्यूमिनी, टर्मिनेलिया चेबुला, टर्मिनेलिया बेलरिका, टेमरिंडस इंडिका।

मुख्य शब्द:- वृक्ष प्रजातियाँ, पारंपरिक ज्ञान, भोजन और औषधि, गोंड और मवासी, पंचमढ़ी बायोस्फीयर अभ्यारण्य।

परिचय:- मानव जाति सदैव से ही वनों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर रही है, जिसमें मनुष्य वनों से भोजन, पशुओं के लिए चारा, औषधियाँ, रेशे, आवास आदि महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ पूरी करता है। पंचमढ़ी में पाए जाने वाले वनों से यहाँ पर रहने वाली आदिवासी

जातियों ने सदियों पुरानी परंपरा का निर्वाह करते हुए संसाधनों का उपयोग करने के लिए विशेष ज्ञान विकसित किया है। ये आदिवासी समुदाय अपनी आय सृजन के लिए विभिन्न वन उत्पाद एकत्र करते हैं। आज के वर्तमान समय में भी ये आदिवासी अपनी अधिकांश परंपराएँ एवं प्रथाएँ अपनाए हुए हैं। इनके ऊपर आधुनिकीकरण, सांस्कृतिक प्रसार और बाजार की शक्तियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग होने के कारण, इन वनवासियों की कई सांस्कृतिक प्रथाएँ वन संसाधनों पर निर्भर करती हैं।

डा. सरला शुक्ला

मध्य प्रदेश में स्थित पंचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व (पीबीआर) में कुछ घने जंगल हैं, जिनमें आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। ऐसे समूह जंगलों ने यहाँ के निवासियों को विभिन्न वृक्ष प्रजातियों का अवलोकन और अध्ययन करने के लिए भरपूर अवसर प्रदान किए हैं, ताकि वे अपना पारंपरिक ज्ञान विकसित कर सकें।

इस शोध पत्र का उद्देश्य पंचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व में उगने वाली विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के उपयोग पर आदिवासी समुदाय के पारंपरिक ज्ञान को उजागर करना है।

अध्ययन क्षेत्र:- भारत में 15 जैवमंडलीय अभयारण्यों में से एक पंचमढ़ी बायोमंडल अभयारण्य $20^{\circ}10'$ से $22^{\circ}50'$ उत्तरी अक्षांश और $77^{\circ}45'$ से $78^{\circ}56'$ पूर्वी देशांतर के लिए स्थित है। यह मध्यप्रदेश के तीन जिलों होशंगाबाद, बैतूल और छिंदवाड़ा में फैला हुआ है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4926.28 वर्ग किमी. है, जिसमें से 524.37 वर्ग किमी. कोर जोन के अंतर्गत आता है, और शेष 4462.93 वर्ग किमी. बफर जोन के अंतर्गत आता है। सामान्यतः यहाँ का तापमान 11° से 42° सेल्सियस के बीच रहता है।

यहाँ पर वनस्पति तथा जीवों की समृद्ध विविधता पाई जाती है। यह अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए भी प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ आदिवासी समुदाय निवास करते हैं, जिनकी अपनी अलग संस्कृति होती है। यहाँ निवास करने वाली आदिवासी जनजाति गोंड है। भारत के मध्य भाग पर ये अधिक संख्या में पाए जाते हैं। इसलिए इस भाग को गोंडवाना राज्य के रूप में जाना जाता है। गोंडों ने अतीत में भारत के इस भाग पर शासन किया था।

सर्वेक्षण के तरीके:- वर्तमान अध्ययन के लिए अभ्यारण्य के बफर जोन का तथा उसके अंदर स्थित कुल 10 गाँवों का सर्वेक्षण किया गया। जिसमें सावरवानी, शाहवान, फतेहपुर, सिंहपुर, अनहोनी, बांदी बोदलकच्छर, खारा और तपरवानी को वृक्ष प्रजातियों के उपयोग से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के ग्रहण अध्ययन से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के ग्रहण अध्ययन के लिए चुना गया। इन चयनित गाँवों में मुख्य रूप से गोंड और मवासी समुदाय और उनकी उपजातियाँ पाई जाती थीं। अध्ययन के चयनित गाँवों में घर-घर जाकर प्रश्नावली सर्वेक्षण किया गया। अधिकांश गाँवों में आमतौर पर पुरुष सदस्य साक्षात्कार के लिए पाए गए, लेकिन इस सर्वेक्षण में महिलाओं से भी साक्षात्कार लिया गया।

इस सर्वेक्षण में प्रश्नावली सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से वृक्ष प्रजातियों के स्वदेशी उपयोग, उनकी प्रसंस्करण तकनीक, उपयोग पद्धति, उपयोग किए जाने वाले पौधे के भाग, वृक्ष प्रजातियों के स्थानीय नाम और पंचमढ़ी अभ्यारण्य में उनकी उपस्थिति के बारे में जानकारी एकत्र की गई। इसके अलावा स्थानीय लोगों को अपने विचार और धारणाएँ व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सहभागी अवलोकन पद्धति का भी प्रयोग किया गया और स्थानीय आदिवासी लोगों की विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर वृक्ष प्रजातियों के बारे में जानकारी एकत्र की गई। स्थानीय लोगों की विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं, जिनमें जन्म, मृत्यु और विवाह समारोह शामिल हैं, में प्रयुक्त वृक्ष प्रजातियों का अवलोकन करने का प्रयास किया गया।

परिणाम और चर्चा:- वर्तमान अध्ययन करने के समय स्थानीय लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली कुल 46 वृक्ष प्रजातियों का अध्ययन किया गया (तालिका 1)। स्थानीय लोगों द्वारा जंगलों और आसपास के क्षेत्रों से एकत्रित की गई सबसे महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियाँ मधुका इंडिका, बुचानिया लैटिफोलिया, डायोस्पायरोस मेलानोजाइलोन, मैंगीफेरा इंडिका, फाइलेन्थस एम्बलिका, सिजिगियम क्यूमिनी, टर्मिनलिया, चेबुला, टर्मिनेलिया बेलिरिका, अनोगीससस लैटिफोलिया, इत्यादि और टेमरिन्डस इंडिका हैं। स्थानीय लोग वृक्ष प्रजातियों के कई उपयोग करते हैं, जिनमें से 14 उपयोगों का अध्ययन किया गया। लगभग 91% वृक्ष प्रजातियों का उपयोग भोजन और औषधि के रूप में किया जाता है (50% औषधि बनाने के लिए और 41% भोजन के लिए)। इसके अतिरिक्त वृक्ष प्रजातियों का उपयोग सांस्कृतिक प्रथाओं (26%), ईंधन की लकड़ी (22%), घर निर्माण (17%), कृषि उपकरण और यंत्र बनाने (15%), फर्नीचर (11%), मछली के जहर (9%), चारा, तेल बनाने, मच्छर भगाने, रस्सी, कप और प्लेट बनाने और जीव जन्तुओं के बाड़ लगाने के काम में लिया जाता है।

डा. सरला शुक्ला

यहाँ के स्थानीय लोग पारंपरिक रूप से वृक्ष प्रजातियों के विभिन्न भागों का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए करते हैं। स्थानीय लोग सबसे अधिक संख्या में (50%) वृक्षों के फल इकट्ठा करते हैं। उसके बाद तना (41%), पत्ती (30%) और छाल (17%) का प्रयोग करते हैं। वृक्षों के बीज, तने, राल, बीज, फल और फूल और टहनी जंगलों से एकत्र किए जाते हैं। शोरिया रोबोस्टा, एनोर्जिजस लैटिफोलिया, बोसवेलिया सेराटा और स्टेरकुलिया यूरेस जैसे चार महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों से गोंद भी एकत्र किया जाता है। इसी प्रकार से घरेलू उपयोग के लिए भी वृक्षों की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियाँ हैं जैसे टर्मिनलिया टोमेंटोसा, मधुका इंडिका और शोरिया रोबोस्टा आदि।

तालिका 1:- गाँव में स्थानीय लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले वृक्षों की प्रजातियाँ और उनके स्थानीय नाम व भाग

क्रमांक	वृक्ष प्रजाति	प्रयुक्त भाग	उपयोग
1	बबूल अरेबिका विल्ड	तना	ईंधन की लकड़ी, बैलगाड़ियों के पहिये का निर्माण
2	अकेशिया कैटेचू विल्ड	तना	कृषि उपकरण, मकान निर्माण, ईंधन की लकड़ी
3	स्केल मैंगोलिस कोरिया	तना; फल	लकड़ी औषधि; फल → खाद्य, पेट सम्बन्धी औषधि
4	स्नोपिक्स लैटिफोलिया वॉल	छाल/खबर; तना	चर्म कार्यों में
5	स्नोपिक्स पेंडुला रॉक्सब	काला धौड़ा/फल; जड़	औषधीय उपयोग
6	अज्रादिरैक्टा इंडिका	नीम; फल; तना	तेल (खुजली के इलाज में प्रयोग); औषधि (मलेरिया); तना → दाँतदर्द, दाँतों के रूप में प्रयोग
7	बॉम्बेक्स सीबा एल	सेमल; फल; फूल	औषधि के रूप में; फूल → खाने योग्य
8	बॉसवेलिया सेराटा रॉक्सब	सालई/अचार; फल; चिरौंजी; बीज	खाद्य; बीज → तेल → खाद्य
9	ब्यूटिया मोनोस्पर्मा	खबरा; तना; पत्ता	सांस्कृतिक पौधा; पत्ता → टोपी और प्लेट बनाना
10	कैड्रेला टूना रॉक्सब	घिरिटा; तना	फर्नीचर, कृषि उपकरण
11	डालबर्गिया पैनिकुलाटा रॉक्सब	अगाई; जड़	औषधि (पैरों की सूजन)
12	फिक्स बेंगालेंसिस एल	बरगद; पत्ता	खाने योग्य फल
13	फिक्स रिलिजियोसा एल	पीपल; पत्ता; फल	चारा रूप में; फल → खाद्य रंग में
14	गरुगा पिन्नाटा रॉक्सब	कैकड़; तना	कृषि उपकरण में
15	होलाहर्ना एंटीडिसेंटेरिका वॉल	दुधई; फल; बीज	औषधि
16	लैगरस्ट्रोमिया पाविफ्लोरा रॉक्सब	लौडिया; तना	लकड़ी

डा. सरला शुक्ला

17	मधुका इंडिका एल	गोंद; फूल; फल	खाने योग्य; फल → शराब बनाना, तेल बनाना
18	मेलिया एजेडारच एल	तुम्बी; बीज	मछली का चारा
19	मैंगीफेरा इंडिका एल	आम; फल	खाने योग्य
20	कैनारियम सिल्वेस्ट्रिस रॉक्सब	खबूर; फल	खाने योग्य
21	फाइलेंथस एम्ब्लिका एल	अमला; फल	तेल, खाद्य
22	प्लेटोकार्पस मार्सुपियम रॉक्सब	बीजा; तना	मकान निर्माण, फर्नीचर
23	शोरिया रोबस्टा गार्टिन	साल/सोरई; तना	मकान निर्माण, फर्नीचर, ईंधन की लकड़ी, हल बनाना
24	स्टेरकुलिया पाविफोलिया कोर्स	कलाम; तना	सांस्कृतिक
25	स्टेरकुलिया यूरेन्स रॉक्सब	गुल्लर/कुल्लू; छाल	औषधियाँ
26	साइजीजियम क्यूमिनी	जामुन; तना	सांस्कृतिक विकास
27	टैमिरंडस इंडिका एल	इमली; फल	खाद्य (उपचार की तैयारी); औषधियाँ
28	टेक्टोना ग्रैंडिस एल	सागौन; तना	मकान निर्माण, सांस्कृतिक, फर्नीचर
29	टर्मिनेलिया चेबुला रेट्स	हरड़; फल	औषधि (पाचन सम्बन्धी)

परंपरागत रूप से पंचमढ़ी में यहाँ के स्थानीय लोग आवश्यक वृक्ष प्रजातियों को इकट्ठा करते समय कुछ नियमों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए मधुका इंडिका, बुचानिया लैटिफोलिया और मैंगीफेरा इंडिका जैसी प्रजातियों को आमतौर पर मार्च महीने में चैत्र उत्सव के बाद इकट्ठा किया जाता है। यह उत्सव ग्राम देवताओं को मुर्गी और बकरी का अर्पण करके मनाया जाता है, जिन्हें लोग वनों और वन उत्पादों का स्वामी मानते हैं। मधुका इंडिका सबसे महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजाति है, क्योंकि इसका उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है। स्थानीय लोग इसके कच्चे फूलों का सेवन करते हैं, खाने के लिए फूलों को तेल में तला भी जाता है। फूलों को पीसकर पाउडर भी बनाया जाता है, जिसे आटे (गेहूँ के दाने के पाउडर) में मिलाकर चपाती बनाई जाती है। ऐसी चपाती को 'थेत्रा' कहा जाता है। इसका फल (स्थानीय रूप से गुली कहा जाता है) इसके फलों से तेल भी निकाला जाता है।

यह वृक्ष एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रजाति है और इसकी शाखाओं का उपयोग विवाह समारोहों में किया जाता है। मधुका इंडिका को स्थानीय लोगों द्वारा भी पवित्र माना जाता है, क्योंकि वे इस वृक्ष के नीचे अपने संरक्षक देवताओं की पूजा करते हैं, जो अतः इस प्रजाति को अत्यधिक दोहन से बचाने में मदद करता है।

मधुका इंडिका को तोड़ने के बाद उन्हें आंगन में धूप में सुखाया जाता है और पूरी तरह से सूखे फूलों को झूठ के बोरे या बोरी की टोकरी में रखा जाता है। उनका मानना है कि इससे फूलों पर कीड़ों का असर कम होता। माना जाता है कि ताजे फूलों की तुलना में संग्रहित फूल अधिक स्वादिष्ट होते हैं, इसलिए कुछ स्थानीय लोग फूलों को 3 से 4 साल तक संग्रहित रखते हैं। कुछ लोग पैसों के लाभ के लिए इन फूलों को उसी साल बेच देते हैं, जिस साल उन्हें तोड़ा जाता है। मधुका इंडिका के फल मई में तोड़ा जाता है और धूप में सुखाकर इसे संग्रहित कर लिया जाता है।

डा. सरला शुक्ला

मधुका इंडिका से बनी शराब भी बहुत लोकप्रिय होती है। यहाँ यह शराब अधिकांश लोग बनाते हैं। यह शराब नदी या नाले के किनारे बनाई जाती है, क्योंकि इसकी आसवन क्रिया में बहुत पानी की आवश्यकता होती है। यह शराब यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा पी भी जाती है और इसे देवी-देवताओं को भी अर्पित किया जाता है। विवाह या मृत्यु और त्यौहार पर भी मधुका इंडिका की शराब का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है।

लड़के के माता-पिता शादी की तारीख तय करने के लिए मधुका इंडिका की शराब की बोतल लेकर लड़की के घर जाते हैं। स्थानीय लोग शादी समारोह के दौरान मधुका इंडिका की शाखाओं का भी उपयोग करते हैं। शादी के दिन दो युवकों को जंगल में मधुका इंडिका की दो शाखाएँ लाने के लिए भेजा जाता है। शाखाओं के साथ उनके लौटने पर घर की सबसे बड़ी महिला को उनकी वापसी की सूचना दी जाती है। वह पानी और हल्दी का घड़ा लेकर आती है और शराब लाने वाले व्यक्ति के पैर और शाखाओं को धोती है। फिर शाखाओं को विवाह स्थल पर रख दिया जाता है। मधुका इंडिका की ऐसी शाखाओं को विवाह के साक्षी के रूप में प्रतीक और सम्मान दिया जाता है।

भोजन और औषधि के लिए वृक्षों का उपयोग:-

कुल 46 वृक्ष प्रजातियों में से 23 प्रजातियों के फलों का उपयोग भोजन और औषधि के रूप में किया जाता है, डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलोन, सिजियम क्यूमिनी, टर्मिनेलिया चेबुला, टर्मिनेलिया बोलिरिका, टेमरिन्डस इंडिका, रगल मामेलोस, ब्लीचेरा डीजुग्गा, पोंगामिया पिन्नाटा आदि के फलों का उपयोग कच्चे रूप में या प्रसंस्करण के बाद भोजन और औषधि के रूप में किया जाता है। बुचानिया लैज के बीज में गुड़ मिलाकर लड्डू (मिठाई) बनाया जाता है। फाइलेन्थस एम्बलिका के फलों का उपयोग औषधि और अचार बनाने में किया जाता है। इसके पत्ते देवी-देवताओं को भी अर्पित किए जाते हैं। टर्मिनेलिया चेबुला और टर्मिनेलिया बोलिरिका के फल व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए बड़े पैमाने पर इकट्ठा किए जाते हैं। हालाँकि श्लीचेरा त्रिजुगा के पेड़ कम संख्या में हैं और घनत्व भी कम है, फिर भी इसकी मांग अधिक है और लोग इसके फल एकत्र करते हैं। जंगलों में धूमते समय इसके फल कच्चे ही खाए जाते हैं। इसे खुजली के इलाज के रूप में प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी मच्छरों से छुटकारा पाने के लिए इसे शरीर पर मालिश भी किया जाता है।

भोजन के लिए सेमेकापिस एनाकार्डियम के फल इकट्ठा करते समय लोग इससे लेटेक्स निकालते हैं, जो त्वचा के लिए खतरनाक होता है। आस-पास के जंगल में एगल मामेलोस की उपलब्धता कम है इसलिए कुछ लोगों ने इसे अपने घर के बगीचों में लगाया है। स्थानीय लोग इन फलों को पौष्टिक और पेट की समस्याओं और अपच के लिए औषधि मानते हैं। गर्मी के मौसम में इनका उपयोग लू लगने से बचाव के लिए किया जाता है। एगल मामेलोस के गूदे का उपयोग शरीर और पेट को ठंडा रखने के लिए किया जाता है और यह स्थानीय बाजार में भी बिकता है। कुछ वृक्ष प्रजातियों के बीजों का उपयोग भोजन और औषधि के रूप में भी किया जाता है। स्थानीय लोगों द्वारा सबसे अधिक पसंद किए जाने वाले बीज बुचानिया लैटिफोलिया, मैंगिफेरा इंडिका, मधुका इंडिका और सिजियम क्यूमिनी के हैं। सिजियम क्यूमिनी के बीजों को पीसकर पाउडर बनाया जाता है और मधुमेह के रोगी को भोजन में पहले दिया जाता है। स्थानीय लोग पेचिस के इलाज के लिए होलाहेना एंटीडिसेंटेरिका के बीजों का भी उपयोग करते हैं। यह प्रजाति जंगल में काफी दुर्लभ है। इमली इंडिका के फल और बीजों का उपयोग बुखार और अपच के इलाज के लिए किया जाता है।

फाइलेन्थस एम्बलिका, टर्मिनेलिया चेबुला और टर्मिनेलिया बेलिरिका की छाल का पेस्ट और फल पेट की बीमारियों और अपच के इलाज में उपयोगी होते हैं। वर्तमान में, इन प्रजातियों की बाजार में काफी मांग है, इसलिए स्थानीय लोग व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए इन्हें इकट्ठा करते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि ये प्रजातियाँ भूख तेजी से बढ़ाती हैं। स्टेरकुलिया यूरेन्स की टहनियों और गोंद का उपयोग प्रसव में आसानी और प्रसवोत्तर टॉनिक के रूप में किया जाता है। इसके राल को गेहूँ के आटे और गुड़ के साथ मिलाकर घी में तला जाता है और महिलाओं को पौष्टिक आहार के रूप में दिया जाता है।

फाइलेन्थस एम्बलिका, टर्मिनेलिया चेबुला और टर्मिनेलिया बेलिरिका की छाल का पेस्ट और फल पेट की बीमारियों और अपच के इलाज में उपयोगी होते हैं। वर्तमान में इन प्रजातियों की बाजार में काफी मांग है इसलिए स्थानीय लोग व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए इन्हें इकट्ठा करते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि ये प्रजातियाँ भूख भी बढ़ाती हैं। स्टेरकुलिया यूरेन्स की टहनियों और गोंद का उपयोग प्रसव में आसानी और प्रसवोत्तर टॉनिक के रूप में किया जाता है।

डा. सरला शुक्ला

है। इसके राल को गेहूँ के आटे और गुड़ के साथ मिलाकर घी में तला जाता है और महिलाओं को पौष्टिक आहार के रूप में दिया जाता है। वृक्षों का उपयोग पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति में किया जाता है।

इमली के फल और बीजों को पत्थर पर पीसकर उसमें 7 या 9 काली मिर्च मिलाई जाती है। ऐसे हर मिश्रण को एक बाल्टी पानी में अच्छी तरह मिलाया जाता है। कभी-कभी बाल्टी में कुछ घास या बाँस के पत्ते भी मिला दिए जाते हैं और पशुओं को पीने के लिए दिया जाता है। पशुओं में कभी-कभी कीड़ों का संक्रमण हो जाता है, जिसे मंत्रों द्वारा ठीक किया जाता है। यह मंत्र कुछ विशेष व्यक्तियों द्वारा दिए जाते हैं, जिनके पास पारंपरिक ज्ञान होते हैं। उपचार में पेचिस (फाइलेन्थस) का भी उपयोग किया जाता है। संक्रमित पशु को रस्सी बाँधकर लिटाया जाता है संक्रमण की सीमा का परीक्षण करने के लिए संक्रमित भागों पर थोड़ी मात्रा में दही का पानी डाला जाता है। संबंधित पशु के संक्रमित अंगों को उसी पानी से धोया जाता है। विशेष ध्यान रखने वाला व्यक्ति कुछ मंत्रों का जाप करना शुरू करता है। ऐसा माना जाता है कि मंत्र जाप करते समय कीट बाहर निकल आते हैं। इस प्रक्रिया के बाद प्रभावित अंग को साफ किया जाता है! फाइलेन्थस एम्ब्लिका के पत्तों से सफाई की जाती है। इस रोग का इलाज कुछ पारंपरिक नियमों और सावधानियों के साथ किया जाता है, जिसमें एक निश्चित दिन का चयन करना शामिल है।

घरों और कृषि के उपकरणों को बनाने के लिए वृक्षों का उपयोग :-

विभिन्न प्रकार की औषधियों के अतिरिक्त वृक्ष घर बनाने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आठ वृक्ष प्रजातियाँ ऐसी हैं जिनका घरों के निर्माण में उपयोग किया जाता है। यहाँ घरों का निर्माण करने से पहले भोमका (पुजारी) उपयुक्त भूमि का चयन करते हैं और चयनित भूमि पर वे सफलता और शांति के प्रतीक के रूप में शोरिया रोबस्टा की एक शाखा लगाते हैं, अन्य महत्वपूर्ण प्रजातियों को उस क्षेत्र में लगाई जाती हैं, वे हैं मधुका इंडिका, टर्मिनालिया टोमेंटोसा और ब्यूटिया मोनोस्वमी।

घर निर्माण के लिए इनमें से किसी भी वृक्ष प्रजाति को काटने से पहले वे अपने वनदेवता को मधुका इंडिका का पेय अर्पित करते हैं। कृषि उपकरण बनाने हेतु प्रजातियों के महत्वपूर्ण उपयोगों में से एक है और इस अध्ययन में शोरिया रोबस्टा, कैलोट्रोपिस प्रोसेरा, यूफोरिया मोनोस्पर्म और अजादीरजटा इंडिका सहित ऐसी 7 वृक्ष प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया गया है। इनके समाज में कुछ कारीगर हल और हंसिया के हैंडल बनाते हैं, जबकि समतलीकरण उपकरण और टुंड्रा जैसे कृषि उपकरण आधुनिक किसान स्वयं बनाते हैं।

स्थानीय लोग समतलीकरण के उपकरण बनाने के लिए कैलोट्रोपिस प्रोसेरा और डंडा के लिए अनादिकरझा इंडिका को प्राथमिकता देते हैं। अनादिकरझा इंडिका के जीवाणुरोधी गुण मिट्टी में कीटों को संक्रमण से बचाने के लिए बनाए जाते हैं। इन दोनों प्रजातियों को लंबे समय तक चलने वाला माना जाता है।

समतलीकरण उपकरण बनाने के लिए आमतौर पर एक सीधा पेड़ का तना चुना जाता है, जिसे पहले बारी (खुरचने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला लोहे का एक उपकरण) से खुरचकर समतल किया जाता है। समतल करने वाले यंत्र के बीच में एक छेद बनाया जाता है जिसमें उसी पेड़ की या बांस की या टेक्टोना ग्रैंडिस की एक लंबी छड़ी डाली जाती है, जिसे जमीन समतल करते समय बैल से बांध दिया जाता है। इसी प्रकार धान और गेहूँ जैसे अनाज बोने के लिए विशेष रूप से उपयोग किए जाने वाले टुंड्रा को बनाने के लिए स्थानीय लोग चयनित तने के भीतरी हिस्से या गूदे को निकालकर उसे खोखला कर देते हैं। बोवाई के दौरान इसे बैल के सिर से बांधा किया जाता है।

मछली पकड़ने में पेड़ों का उपयोग :-

इस क्षेत्र में सम्मिलित गांवों के लोगों का मुख्य व्यवसाय मछली पकड़ना नहीं है। फिर भी यहाँ के लोग मछली अधिक संख्या में पकड़ते हैं। ये मछली पकड़ने के लिए पारंपरिक औजारों का प्रयोग करते हैं, जिनमें से अधिकांश औजार बांस के बने होते हैं। स्थानीय लोग मेर 'धकनी' और 'धुती' जैसे मछली पकड़ने के औजारों का उपयोग करते हैं। औजारों के अलावा वे कुछ वृक्ष प्रजातियों के भागों का उपयोग मछली के जहर के रूप में भी करते हैं।

मछली जहर के रूप में उपयोग किए जाने वाले महत्वपूर्ण वृक्ष हैं-

क्लोरोक्सिलोन स्वेतेनिया की छाल, एगल मार्मालोस की जड़, केसिया टोमेंटोसा और मेलिया एजेडारैक्टस की छाल और बीज। आवश्यक वृक्ष भाग को काटकर या छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर इकट्ठा किया जाता है। वे एकत्रित भाग को तालाब के पत्थरों के नीचे दबा देते हैं। यह विधि तब अपनाई जाती है जब वे तालाब जैसे स्थिर जल निकायों में मछली पकड़ते हैं। गांवों में वे बहते पानी को पत्थर की दीवार बनाकर रोक देते हैं और मछली पकड़ने के लिए वृक्ष का चूर्ण फैला देते हैं। कम ऑक्सीजन के कारण मछलियाँ घुटन महसूस करती हैं और ऑक्सीजन के लिए पानी की सतह पर आ जाती हैं, जिससे लोगों को मछलियाँ आसानी से पकड़ने में मदद मिलती है।

जब उनसे पूछा गया कि इस तरह की मछलियों को खाने से मानव स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, तो जवाब नकारात्मक था।

धर्म और वृक्ष:-

परंपरागत रूप से स्थानीय लोग धार्मिक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में विभिन्न प्रकार के पौधों का उपयोग करते हैं। स्थानीय लोग कई पौधों की प्रजातियों की पूजा करते हैं, जैसे कि मधुका इंडिका, शोरिया रोबस्टा, बम्बली कोडिया, फिक्स रिलिजियोसा, फिक्स बंगालेंसिस, अजादिरच्टा इंडिका और एगल मार्मालोस। स्थानीय लोग इन वृक्ष प्रजातियों के नीचे अपने ग्राम देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। कुछ विशेष पौधों की प्रजातियों का उपयोग महत्वपूर्ण अवसरों और अनुष्ठानों में बहुत महत्वपूर्ण होता है, जैसे कि कन्ये का जन्म, विवाह और मृत्यु। विवाह समारोह में उपयोग की जाने वाली पौधों की प्रजातियाँ हैं शोरिया रोबस्टा, मधुका इंडिका, मिटागाइना पालिफ्लोरा, मेनागेकेरा कोडिया, टर्मिनेलिया टोमेंटोसा, एग्नोप्सिस लोटीफोलिया, सिलियम क्यूमिनी आदि। पंचमढ़ी बफर अभयारण्य में वृक्षों का स्वदेशी उपयोग यह है कि मृतक के पलंग को केवल बाँस तथा फूलों से सजाया जाता है। पिछले कुछ समय से वे केले के पत्तों का भी उपयोग कर रहे हैं। शवदाह के बाद वे पवित्र माना जाने वाला बाँस की एक छोटी शाखा को पकड़ते हैं। वे शवदाह के लिए किसी विशिष्ट प्रजाति को प्राथमिकता नहीं देते बल्कि वे किसी भी प्रजाति की लकड़ी का उपयोग करते हैं।

दो जलाऊ लकड़ी के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

अन्य उपयोग :- जलाऊ लकड़ी के लिए पौधों का सम्पूर्ण करना एक आम प्रथा है। क्योंकि स्थानीय लोग सभी भी इस उद्देश्य के लिए जंगलों पर निर्भर हैं। कुछ पौधे ऐसे हैं जिनका उपयोग अक्सर जलाऊ लकड़ी के रूप में किया जाता है। इनमें प्रमुख हैं कैलिफोरोसिलोन स्वेतेनिया, अकेशिया कैटेक्यू, एनोसिसस पेडुला, टर्मिनेलिया टोमेंटोसा, शोरिया रोबस्टा और ब्युटिया मोनोस्पर्मा के पत्तों का उपयोग मुख्य रूप से कप, प्लेट और थैले बनाने में किया जाता है। कप और प्लेटें बाँस के पत्तियों से सिलकर बनाई जाती हैं। कप और प्लेटों को धूप में सुखाया जाता है और मुख्य रूप से रस्सी से बाँधकर रखा जाता है। कप-प्लेटें एकत्र करने और बनाने की प्रथा विवाह, मृत्यु संस्कार और ग्राम उत्सव जैसे समारोह से कुछ दिन पहले देखी जाती है। कुछ ग्रामीण मौसमी रूप से कप-प्लेटों को स्थानीय बाजार में बेचते हैं, जहाँ 100 कप या प्लेट लगभग 20 रुपये में मिलते हैं। इसके अलावा स्थानीय लोग कुछ पौधों की प्रजातियों का उपयोग करके अपनी कृषि भूमि की बाड़ लगाते हैं। कृषि की सीमाएँ बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण पौधा की प्रजाति एनोजिसस लेटेरिफोलिया है। स्थानीय लोग श्मशान स्थल पर अपादिरैच्टा इंडिका की एक टहनी और कुछ मिट्टी भी रखते हैं। जंगल से एकत्रित वृक्ष प्रजातियों के विभिन्न भागों को भी संग्रहण की मात्रा के आधार पर बेचा जाता है। →

निष्कर्ष :- इस अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि, स्थानीय लोगों की आजीविका मुख्य रूप से वन संसाधनों पर निर्भर है। उन्होंने विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के संग्रह के लिए विशेष विधियों उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को अपनाया है। संग्रह प्रक्रिया और कुछ सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ आगे बढ़ती है। एकत्रित की गई इन प्रजातियों में से अधिकांश का उपयोग स्थानीय लोग करते हैं और विपणन के लिए इनका उपयोग बहुत कम होता है। वे पौधे जिनका सेवन इन

डा. सरला शुक्ला

प्रजातियों द्वारा किया जाता है, वे काफी पौष्टिक होते हैं। इन उपयोगी वृक्षों का संरक्षण समय की माँग है, जैसे पौधों का संरक्षण पारिस्थितिक संतुलन पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान और स्थानीय समुदायों की आजीविका सुरक्षा बनाए रखने में सहायक होगा।

References :

- EPCO] 2001- Panchmari Biosphere Reserve.Environment Planning & Co-ordination Organization] Bhopal.
- Gadgil, M, Berkes, F, Folke C.1993. Indigenous knowledge for biodiversity conservation Ambio, 22, 151-156.
- Kala, C.P. 2005. Ethnomedicinal botany of the Apctami in the Eastern Himalayan region of India. Journal of Ethnobiology and Ethnornedicine,1 (11):1- 12.
- Kala, C.P. 2010,Home gordens and management of key species in Panchmarhi Biosphere Reserve of India, Journal of Biodiversity 111-117.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.